एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

राजस्थान में खजूर की खेती

(सिमरन कौर, संदीप सिंह एवं *अमित कुमार)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahechamit211@gmail.com

खजूर शुष्क जलवायु में उगाया जाने वाला प्रचीनतम फलदार वृक्ष है। पाल्मेसी कुल के इस वृक्ष का वानस्पतिक नाम फीनिक्स डेक्टीलीफेरा है। मानव सभ्यता के सबसे पुराने कृषि किए जाने वाले फलों में से यह एक फल है। इसकी उत्पत्ति फारस की खाड़ी मानी जाती है। दक्षिण इराक (मेसोपोटोमिया) में इसकी खेती ईसा से 4000 वर्ष पूर्व प्रचलित थी। मोहनजोदड़ों की खुदाई के अनुसार भारत-पाकिस्तान में भी ईसा से 2000 वर्ष पूर्व इसकी कृषि विद्यमान थी। पुरातन विश्व में खजूर की व्यवसायिक खेती पूर्व में सिन्धु घाटी से दक्षिण में तुर्की-परशियन-अफगान पहाड़ियों, इराक किरकुक-हाईफा तथा समुद्री तटीय सीमा के सहारे-सहारे ट्यूनिशिया तक बहुतायत में की जाती थी। इसकी व्यवसायिक खेती की शुरूआत सर्वप्रथम इराक में हुई। ईराक, सऊदी अरब, इरान, मिश्र, लिबिया, पाकिस्तान, मोरक्को, ट्यूनिशिया, सूडान, संयुक्त राज्य अमेरिका व स्पेन विश्व के मुख्य खजूर उत्पादक देश है। हमारे देश में सर्वप्रथम 1955 से 1962 के मध्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के क्षेत्रीय केन्द्र अबोहर द्वारा मध्यपूर्व के देशों संयुक्त राज्य अमेरिका व पाकिस्तान से खजूर की कुछ व्यवसायिक किस्मों के पौधे मंगवाए गये थे। इसके बाद अखिल भारतीय खजूर अनुसंधान परियोजना, बीकानेर द्वारा 1978 से खजूर के सकर्स आयात शुरू किया गया|"

राजस्थान के जैसलमेर, बाडमेर, बीकानेर, व जोधपुर आदि के शुष्क जलवायु वाले पश्चिमी क्षेत्र खजूर की खेती के लिए उपयुक्त पाए गए है। खजूर पर सामान्यतः अधिक तापक्रम व पाले का असर नही होने तथा लवण सहन करने की क्षमता के कारण राज्य का काफी बड़ा क्षेत्र खजूर की खेती के अन्तर्गत प्रभावी रूप से उपयोग में लाया जा सकता हैं। ऐसे क्षेत्र जो बहुत अधिक लवणीय हैं अथवा जहाँ जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है अथवा सिंचाई हेतु लवणीय जल ही उपलब्ध है जो अन्य फसलों के लिए उपयुक्त नहीं वहाँ पर भी इसकी खेती की जा सकती है।

केन्द्र सरकार एवं राजस्थान सरकार के प्रयासों और वैज्ञानिकों एवं कृषि विशेषज्ञों की मदद से राजस्थान के किसान पारंपरिक खेती के तरीकों के साथ-साथ आधुनिक कृषि के युग में प्रवेश कर रहे है। फलस्वरूप राजस्थान में जैतून, जोजोबा (होहोबा), खजूर जैसी वाणिज्यिक फसलें भी होने लगी है।

राज्य की सूक्ष्म एवं गर्म जलवायु खजूर की खेती के लिए वरदान साबित हो रही है। राजस्थान का उद्यानिकी विभाग उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्रों में खजूर की खेती को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रहा है। खजूर एक ऐसा पेड़ है जो विभिन्न प्रकार की जलवायु में अच्छी तरह से पनपता है। हालांकि, खजूर के फल को पूरी तरह से पकने और परिपक्व होने के दौरान लम्बे समय तक शुष्क गर्मी की आवश्यकता होती है। लम्बे समय तक बादल छाए रहने और हल्की बूंदाबादी इसकी फसल को अधिक नुकसान पहुंचाती है।

खजूर में कई तरह के गुण पाए जाते है, जिसका सेवन करने से मनुष्य में ब्लड प्रेशर, दिल, मनुष्य में कैंसर, पेट और हड्डियों से सम्बंधित बीमारियों का खतरा कम हो जाता है | खजूर को खाने के अलावा इसके फलो से अनेक प्रकार की चीजें जैसे **जूस, जैम, चटनी, अचार और बेकरी उत्पादन** की कई चीजें शामिल है

इसके फूल आने और फल के पकने के मध्य की समयावधि का औसत तापमान कम से कम एक महीने के लिए 21 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस अथवा इससे अधिक होना चाहिए। फल की सफलतापूर्वक परिपक्वता के लिए लगभग 3000 हीट यूनिटस की आवश्यक होती हैं। राजस्थान का मौसम इसके लिए उपयुक्त हैं।

खजूर के उत्पादन के लिए उचित जल निकासी वाली रेतीली मिट्टी की आवश्यकता होती है | कठोर भूमि में इसकी खेती को नहीं किया जा सकता है | इसकी खेती में 7 से 8 के मध्य P.H. मान वाली भूमि की आवश्यकता होती है, खजूर एक शुष्क जलवायु का पौधा है | इसलिए इसके पौधों को अधिक वर्षा की जरूरत नहीं होती है | मरुस्थलीय क्षेत्रों में इसकी खेती को आसानी से किया जा सकता है | इसके पौधे तेज धूप में अच्छे से विकास करते है | ठन्डे प्रदेशो में इसकी खेती को नहीं किया जा सकता है | इसके पौधों को अच्छे से वृद्धि करने के लिए 30 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, तथा फलों के पकने के दौरान इसे 45 डिग्री का तापमान चाहिए होता है| इसलिए राजस्थान का वातावरण खजूर की खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है |

वर्तमान समय में खजूर की कई उन्नत किस्में बाजार में मौजूद है, जिन्हे जलवायु और पैदावार के हिसाब से उगाया जा रहा है | इन उन्नत किस्मो को नर और मादा दो प्रजातियो में बांटा गया है, जिनकी जानकारी इस प्रकार है –

मादा प्रजाति की किस्में (Female Species)

इस मादा प्रजाति की उन्नत क़िस्म को फल देने के लिए उगाया जाता है |

बरही :- खजूर की इस क़िस्म को अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उगाया जाता है | इसके पौधों अधिक तेजी से वृद्धि करते है | इसके पौधों में फल देरी से निकलते है, तथा निकलने वाले फलों का आकार अंडाकार और रंग पीला होता है | इसके एक पौधे से तक़रीबन 70 से 100 KG फलों को प्राप्त किया जा सकता है |

हिल्लावी :- हिल्लावी खजूर की एक अगेती क़िस्म होती है, जो जुलाई के महीने में उत्पादन देने के लिए तैयार हो जाती है | इस क़िस्म के फलों का रंग हल्का नारंगी पाया जाता है, जिसमे छिलका पीले रंग का होता है | इसका एक पौधा 100 KG तक की पैदावार देता है |

इसके अलावा भी खजूर की कई उन्नत किस्में जैसे – जामली, खदरावी, मेडजूल आदि को अधिक पैदावार देने के लिए तैयार किया गया है|

नर प्रजाति की किस्में (Male Species)

इस नर प्रजाति की किस्मो में फलों का उत्पादन नहीं होता है, इसके पौधों पर केवल फूल खिलते है| धनामी मेल :- धनामी मेल के पौधों पर तकरीबन 10 से 15 फूल खिलते है | इसके प्रत्येक फूल से परागकण की 10 से 15 ग्राम की मात्रा पाई जाती है |

मदसरीमे :- यह भी एक नर क़िस्म है, जिसमे केवल 5 फूल खिलते है | इसके प्रत्येक फूल से परागकण की 6 ग्राम की मात्रा पाई जाती है |

खजूर के खेत की तैयारी और उवर्रक की मात्रा (Date Field Preparation and Fertilizer Quantity)

खजूर की खेती के लिए रेतीली और भुरभुरी मिट्टी की आवश्यकता होती है | इसलिए खजूर की फसल लगाने से पहले इसके खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए | इसके लिए सबसे पहले खेत की मिट्टी पलटने वाले हलो से गहरी जुताई कर देनी चाहिए | इसके बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दे | इसके बाद खेत में कल्टीवेटर के माध्यम से दो से तीन जुताई कर दे | इससे खेत की मिट्टी पूरी तरह से भुरभुरी हो जाएगी | खेत की मिट्टी के भुरभुरा हो जाने के बाद उसमे पाटा लगाकर चलवा दे, जिससे खेत की मिट्टी समतल हो जाएगी और खेत में जल-भराव की समस्या नहीं होगी |

इसके बाद खेत में एक मीटर की दूरी रखते हुए व्यास वाले गड्ढो को तैयार कर लिया जाता है | इन गड्ढो में 25 से 30 KG गोबर की पुरानी खाद को डालकर मिट्टी में अच्छे से मिला दिया जाता है | इसके अतिरिक्त खाद के रूप में फोरेट या कैप्टान की उचित मात्रा को भी गड्ढो में देना चाहिए | उवर्रक और खाद की मात्रा देने के बाद गड्ढो की सिंचाई कर दी जाती है, इसके गड्ढो को पौध रोपाई के एक महीने पूर्व तैयार कर लिया जाता है | रासायनिक खाद के रूप में प्रति एकड़ के हिसाब से यूरिया की चार KG की मात्रा को वर्ष में दो बार देना होता है|

खजूर के पौधों की रोपाई का सही समय और तरीका (Date Palm Plants Transplanting Right time and Method)

खजूर के बीजो की रोपाई को पौधों के रूप में करना ज्यादा अच्छा होता है, इससे उन्हें तैयार होने में अधिक समय नहीं लगता है | इसलिए इसके पौधों को किसी सरकारी रजिस्टर्ड नर्सरी से खरीद लेना चाहिए | इसके पौधों को खरीदते समय यह जरूर ध्यान रखे की पौधे बिलकुल स्वस्थ हो | सरकारी नर्सरी से ख़रीदे गए पौधों पर सरकार 70% तक का अनुदान भी देती है | खजूर के पौधों को तैयार किये गए गड्ढो में लगाया जाता है | इन गड्ढो के बीच में 6 से 8 मीटर की दूरी होती है | इन गड्ढो के बीच में एक छोटा सा गड्ढा तैयार कर पौधों की रोपाई की जाती है | इसके पौधों की रोपाई के लिए अगस्त के महीने को उचित माना जाता है | एक एकड़ के खेत में तक़रीबन 70 खजूर के पौधों को लगा सकते है |

खजूर के पौधों की सिंचाई (Palm Plant Irrigation)

खजूर के पौधों को बहुत ही कम सिंचाई की आवश्यकता होती है | गर्मियों के मौसम में इन्हे 15 से 20 दिन की पानी देना चाहिए, वही सर्दियों के मौसम में इसके पौधों को महीने में केवल एक बार ही सिंचाई की आवश्यकता होती है |

खजूर के पौधों में खरपतवार नियंत्रण (Date Palm Plants Weed Control)

खजूर के पौधे 6 मीटर की दूरी पर लगाए जाते है, इसलिए इसके खेत में 5 से 6 गुड़ाई की आवश्यकता होती है | इसके खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई – गुड़ाई तरीके का इस्तेमाल करना चाहिए | खरपतवार नियंत्रण से पौधे अच्छे से विकास करते है, और फलों का उत्पादन भी अच्छे से होता है|

खजूर के फलों की पैदावार और लाभ (Date Fruit Yield and Benefits)

खजूर का पौधा रोपाई के 3 वर्ष बाद पैदावार देने के लिए तैयार हो जाता है | जब इसके फल पक जाते है, तब इसके फलों की तुड़ाई तीन चरणों में कर लेनी चाहिए | पहले चरण की तुड़ाई में इसके ताजे और पके हुए फलों की तुड़ाई की जाती है, दूसरे चरण में इसके नर्म फलों की तुड़ाई की जाती है, तथा अंतिम चरण में फलों के सूख जाने पर तुड़ाई की जाती है, जिसका इस्तेमाल छुहारों को बनाने में किया जाता है |

खजूर की खेती में कम खर्च की आवश्यकता होती है| इसका एक पौधा पांच वर्ष बाद पूर्ण रूप से तैयार होने पर 70 से 100 KG की पैदावार देता है| एक एकड़ के खेत में तक़रीबन 70 पौधे लगाए जाते है, जिससे इसकी एक बार की फसल से 5,000 KG की पैदावार प्राप्त की जा सकती है| खजूर का बाज़ारी भाव काफी अच्छा होता है, जिससे किसान भाई 5 वर्षो में दो से तीन लाख की कमाई आसानी से कर सकते है|